International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

*सुरमणी मंगदा (रिसर्च स्कॉलर)

** डॉ. हर्षा पाटिल (डीन, रिसर्च, कलिंगा यूनिवर्सिटी)

*** डॉ. देवेन्द्र कुमार (एसोसिएट प्रोफेसर, कलिंगा यूनिवर्सिटी)

Article Info
Volume 8, Issue 6
Page Number : 544-550

Publication Issue
November-December-2021

Article History
Accepted : 15 Dec 2021
Published : 30 Dec 2021

सारांश:

प्रस्तुत शोध कार्य में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन सुनियोजित रूप में किया गया है । वर्तमान अध्ययन की समस्या यह है कि ''उच्च्तर माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर क्या होगा '' प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है । इसके लिये कक्षा हायर सेकेण्डरी के विद्यार्थियों द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया । संवेगात्मक बुद्धि को जानने के लिये उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा (2009) द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग करके किया गया । आंकड़ों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा ''टी'' मूल्य का उपयोग किया गया है । परिणाम में पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया ।

जीवन के शिक्षा का कार्य शैक्षिक प्रक्रिया को केवल पूरा करना ही नहीं है अपितु बच्चों के जीवन के अनेक पहलू को जानने हेतु दिशा निर्देश देना भी है । शिक्षा से जहां एक ओर बच्चों में शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वहीं दूसरी ओर बच्चों में सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है । परिणामस्वरूप वह शनै: शनै: प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक निभाने के योग्य बन जाता है । इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिये व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है । सत्य तो यह है कि शिक्षा से इतने अधिक लाभ है कि उसका वर्णन करना कठिन है । शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

संवेग भाव या अनुभूति के अति निकट होने के कारण जब भाव की मात्रा बढ़ती है, तो शरीर में उद्दीप्त होने वाली अवस्था को ही संवेग (भय, क्रोध, प्रेम, चिन्ता, ईर्ष्या, जिज्ञासा) कहते हैं। संवेग के कारण कभी-कभी व्यक्ति इतना प्रकरित हो जाता है कि जाति, धर्म, देश और मानवता के लिये बड़े से बड़ा कार्य करने के लिये तत्पर हो जाता है। इन सभी उद्दीप्त अवस्था को नियंत्रण में रखकर उसका सही समय व स्थान पर सूझ-बूझ से इस्तेमाल करना ही सांवेगिक बुद्धि कहलाता है।

डेनियल गोलमैन (1998)- ने अपने अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर भावात्मक बुद्धि तथा नेतृत्व व्यवहार पर उनका पहला लेख आया, जिसकी प्रतिक्रिया उत्साहजनक थी। पहली प्रतिक्रया थी - वास्तविक रूप में नेतृत्व तथा अनुयायियों की अन्त:क्रिया केवल दो स्वतंत्र मस्तिष्कों की चेतना एवं अचेतना की अवस्था में प्रतिक्रिया नहीं अपितु व्यक्तिगत मस्तिष्क एकल प्रणाली में संगलित हो जाते हैं। तथा दूसरी प्रतिक्रिया- प्रभावशाली नेतृत्व का विचार मस्तिष्क में एक प्रभावशाली सामाजिक क्षेत्र रखता है। इस विचार ने प्रेरित किया कि भावात्मक बुद्धि के विचारों को आगे बढ़ाया गया जिसके आधार पर यह पाया गया कि नेतृत्व प्रभाविता का निर्माण संवेगात्मक बुद्धि के आधार पर होता है तथा इसका अनुमान लगाया जा सकता है। **तिवारी, राजेश (1996) –** ने व्यक्तित्व समायोजन में सामाजिक समूह और उनके बुद्धि के सम्बन्ध का अध्ययन किया जिसमें निष्कर्ष पाया कि विभिन्न वर्गों एवं बुद्धि प्राप्तांक में सार्थक अंतर पाया गया। तथा बालक एवं बालिकाओं के बुद्धि प्राप्तांक में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। मध्य वर्ग की अपेक्षा निम्न वर्ग में समायोजन क्षमता अधिक पायी गयी। **शर्मा, जी.आर. (1978)[1]-** ने किशोर छात्र छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें पाया कि व्यवसायिक कॉलेज के छात्रों की अपेक्षा अव्यवसायिक कॉलेज के छात्रों में घरेलू समायोजन के क्षेत्र में अधिक समस्या पायी गयी। इंजीनियरिंग छात्रों की अपेक्षा आर्ट्स के छात्रों में घरेलू तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्या अधिक पायी गयी। मेडिकल छात्रों की अपेक्षा विज्ञान के छात्रों में पारिवारिक समायोजन कम पाया गया। मेडिकल छात्रों में सामाजिक, संवेगात्मक एवं शिक्षण के क्षेत्र में अधिक समस्या पायी गयी। **मिश्रा, वीणा (1982)** ने किशोर छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष में पाया गया कि - सम्पूर्ण न्यादर्श में संवेगात्मक समायोजन में लिंग भेद पाया गया। जिसमें संवेगात्मक क्षेत्र में छात्र, छात्राओं की अपेक्षा अधिक समायोजित पाये गये। छात्राओं में भी समायोजन के प्रति सक्रियता पायी गयी। छात्र व छात्राओं के सामाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। **ऐरिक और राबर्ट (1988)-**इन्होने सामान्य छात्रों के संवेगात्मक विकास और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक-बालिकाओं की सफलता और असफलता की परिकल्पनाओं का अध्ययन कर पाया कि सफलता और असफलता आंतरिक व बाह्य कारणों पर निर्धारित होती है। तथा दूसरा कारण सफलता, असफलता, क्षमता और प्रयत्नों पर निर्धारित होती है।

इस शोध समस्या में उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया है। तथा इसमें यह देखा जायेगा कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का उनके परिवेश (ग्रामीण व शहरी) पर प्रभाव पड़ता है या नहीं। ऐसे कई उदाहरण देखे गये हैं कि बच्चे संवेगात्मक बुद्धि का सही समय व स्थान पर प्रयोग करके अपनी सूझ-बूझ का परिचय देते हैं तथा अपनी संवेगात्मक बुद्धि की

सहायता से अपने सामाजिक क्षेत्र या परिवेश में समायोजन भी उचित प्रकार से कर पाते हैं , प्रस्तुत समस्या के अंतर्गत कक्षा 11वीं व 12वीं के बच्चों की संवेगात्मक बुद्धि का उसके ग्रामीण या शहरी होने का प्रभाव पड़ता है या नहीं। इसका अध्ययन सुनियोजित रूप से किया गया है।

समस्या

"उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर क्या होगा "

प्रस्तावित शोध समस्या जो कि उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन इसमें शोध की आवश्यकता एवं महत्व गहन रूप से है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले किशोर बालक व बालिकायें अपनी संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग करके किस प्रकार अपने आपको समायोजित करते हैं व अपनी संवेगात्मक बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपने संवेग को नियंत्रित करते हैं और समस्या का हल ढूँढ़ लेते हैं। अत: प्रश्न यह उठता है कि क्या उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर एक समान रहता है अथवा इसमें कोई अंतर पाया जाता है। एवं उनके परिवेश का विपरीत प्रभाव पड़ता है या नहीं।

परिकल्पना

H_1 - शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श चयन में सम्भाव्य न्यादर्श विधि (यादृच्छिक विधि) का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु हायर सेकेण्डरी के जिसमें ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के 300 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के 300 विद्यार्थी जिनकी कुल संख्या 600 है।

शोध अध्ययन के लिये संवेगात्मक बुद्धि मापनी का इस्तेमाल किया गया। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन डॉ. अनीता सोनी एवं डॉ. अशोक शर्मा (2009) द्वारा निर्मित का उपयोग करके किया गया। उपकरण की विश्वसनीयता 0.81 है। तथा इसकी वैधता 0.72 है।

परिणाम -

H_1 – 'शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।'

इस परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के ग्रामीण क्षेत्र तथा शहरी क्षेत्र के 600 विद्यार्थियों के प्राप्तांकों को व्यवस्थित किया गया तत्पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का "टी" मान ज्ञात किया गया। इसे तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 1

संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर विद्यार्थियों के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान

संवेगात्मक बुद्धि मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी	300	97.52	5.23	598	10.28	0.01 स्तर पर सार्थक
शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी	300	92.79	6.46			

*0.01 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.58

विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 1 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्तर के ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के 600 विद्यार्थियों के प्रदत्तों का मध्यमान क्रमश: **97.52** व **92.79** , प्रमाणिक विचलन क्रमश: **5.23** व **6.46** तथा उनके मध्य "टी" मूल्य **10.28** प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के स्तर **df = 598** पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है अत: यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अत: हमारी यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

दण्डआरेख संख्या – 1

संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर ग्रामीण विद्यार्थी एवं शहरी विद्यार्थी के मध्यमान का दण्डआरेख

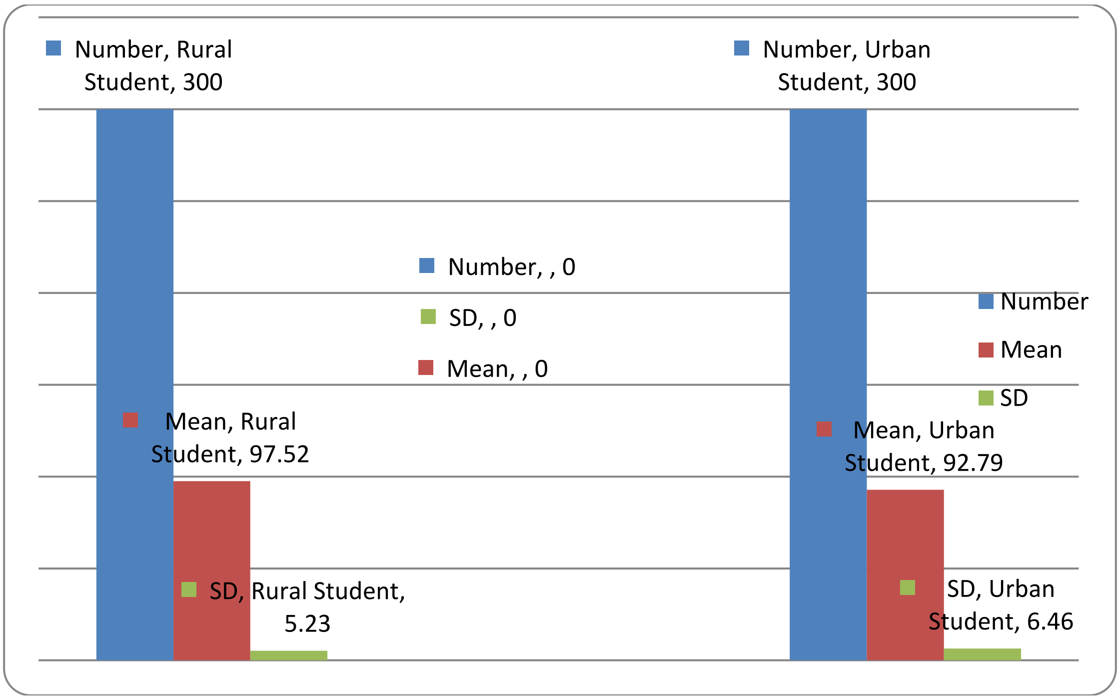

स्वतंत्र अंश 598, **0.01** स्तर पर सार्थक।

व्याख्या -

प्रतिपादित परिकल्पना - 1 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अत: यह स्पष्ट है कि हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान में सार्थक अंतर है अर्थात ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

कारण – इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी परिवेश के विद्यार्थियों को शिक्षा की उचित सुविधायें प्राप्त होती है किंतु ग्रामीण परिवेश के विद्यार्थियों को अच्छी शैक्षिक सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती है। साथ ही साथ ग्रामीण परिवेश में अधिकांश पालक अशिक्षित होते हैं। वे सदैव खेती पर ही निर्भर रहते हैं, और अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये प्रयासरत रहते हैं। जिससे वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन नहीं कर पाते। जबकि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को उनके माता -पिता का सहयोग अपेक्षाकृत ज्यादा मिलता है जिससे उनकी संवेगात्मक विकास ज्यादा अच्छी तरह होता है। इसीलिये ग्रामीण विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों से कम पायी जाती है।

H_{02} '' शहरी क्षेत्र व ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के मध्य संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।''

उपर्युक्त परिकल्पना के सत्यापन के लिए हायर सेकेण्डरी के 150 ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों का तथा 150 शहरी क्षेत्र के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण के मूल्यांकन के पश्चात प्रत्येक वर्ग के प्रदत्तों का मध्यमान और प्रमाणिक विचलन ज्ञात कर दोनों प्रतिदर्शों के प्रदत्तों का सत्यापन ''टी'' मान ज्ञात कर किया गया है । विश्लेषण से प्राप्त परिणाम को तालिका 2 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक – 2

संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर छात्रों के मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी' मान

संवेगात्मक बुद्धि मापनी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (SD)	df	t मूल्य	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र के छात्र	150	96.21	5.32	298	6.56	0.01 स्तर पर सार्थक
शहरी क्षेत्र के छात्र	150	91.89	6.08			

*0.05 सार्थकता स्तर पर 'टी' का सारणी मान = 2.59

विश्लेषण -

उपरोक्त तालिका क्रमांक - 4.02 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर प्राप्त हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यालयों के 150 ग्रामीण छात्रों तथा 150 शहरी छात्रों के प्रदत्तों का कुल संवेगात्मक बुद्धि का मध्यमान क्रमश: 96.21 व 91.89 , प्रमाणिक विचलन क्रमश: 5.32 व 6.08 तथा उनके मध्य ''टी'' मूल्य 6.56 प्राप्त हुआ जो स्वतंत्रता के स्तर **df = 298** पर सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है अत: यह स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र व शहरी क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है। अत: हमारी यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

दण्डआरेख संख्या – 2

संवेगात्मक बुद्धि मापनी पर ग्रामीण छात्रों एवं शहरी छात्रों के मध्यमान का दण्डआरेख

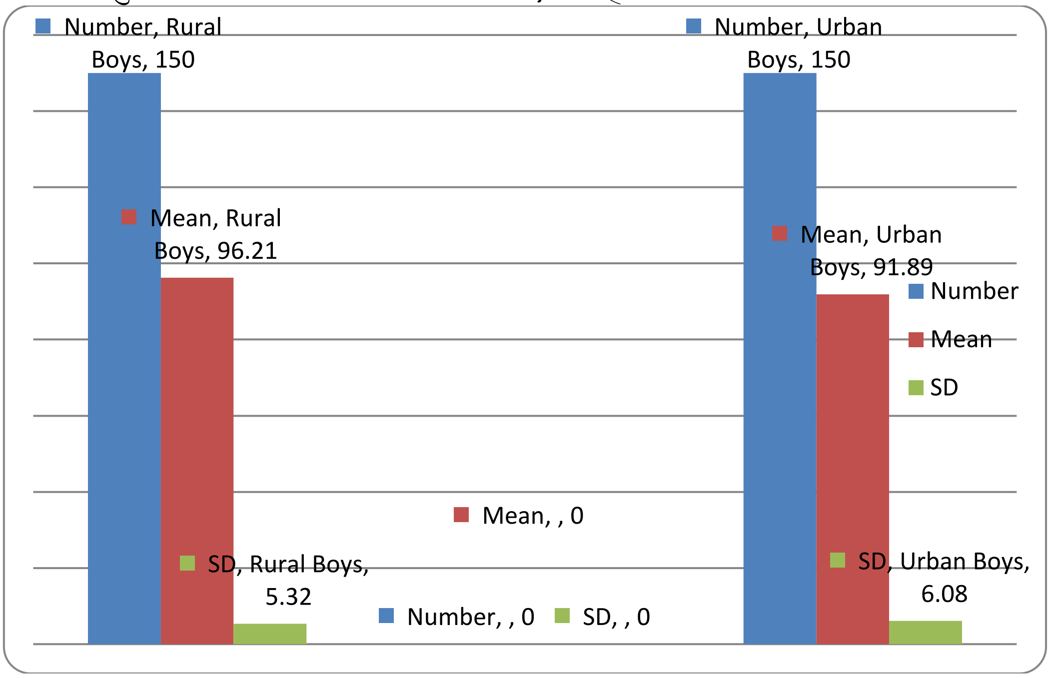

स्वतंत्र अंश 298, 0.01 स्तर पर सार्थक।

व्याख्या -

प्रतिपादित परिकल्पना - 2 में संवेगात्मक बुद्धि मापनी की परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है अत: यह स्पष्ट है कि हायर सेकेण्डरी स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के मध्यमान में सार्थक अंतर है अर्थात ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर है।

कारण – इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शहरी परिवेश के छात्रों को शिक्षा प्राप्त करने के लिये शैक्षिक साधन आसानी से प्राप्त हो जाती है किंतु ग्रामीण परिवेश के छात्रों को अच्छी शैक्षिक सुविधा प्राप्त नहीं हो पाती है। साथ ही साथ ग्रामीण परिवेश में अधिकांश पालक अशिक्षित होते हैं। जिससे वे अपने बच्चों का उचित मार्गदर्शन नहीं कर पाते। जबकि शहरी क्षेत्र के छात्रों को उनके माता -पिता का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षाकृत बहुत अच्छी तरह प्राप्त होता है जिससे उनका संवेगात्मक विकास ग्रामीण छात्रों की तुलना में ज्यादा अच्छे से होता है। इसीलिये ग्रामीण छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि शहरी क्षेत्र के छात्रों से कम पायी जाती है।

शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष -

किशोरावस्था में संवेगों का वेग बहुत अधिक प्रबल होता है, इस कारण से किशोरावस्था में संवेगात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति भी करना आवश्यक है। अत: माता-पिता को चाहिये कि अपने बालक/बालिकाओं को समय प्रदान करें, जिससे कि उनका संवेगात्मक विकास स्वमेव होगा। संवेगात्मक विकास का प्रयोग कर उचित समायोजन भी कर पायेंगे।

अत: इन विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि का विकास करने हेतु अभिभावकों व शिक्षकों को प्रयास करना चाहिये कि उनमें संवेगात्मक बुद्धि किस प्रकार विकसित की जाये जिससे कि वे संवेगात्मक बुद्धि का उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में कर सकें एवं अपना व देश के विकास में सहयोग प्रदान कर सकें।

संदर्भित ग्रंथ सूची

ऐरिक और राबर्ट (1988), 'सामान्य छात्रों के संवेगात्मक विकास और शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े बालक-बालिकाओं की सफलता और असफलता की परिकल्पनाओं का अध्ययन' www.corporatetrainingmaterials.com26.02.2015,PM.

गोलमैन, **डी. (1998)**, वर्किंग विथ इमोशनल इण्टेलीजेन्स, न्यूयार्क: बैण्टम बुक्स ।

मिश्रा, **वीणा (1982)**, किशोर छात्र-छात्राओं के संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबंध, अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, पृ. 6.।

शर्मा, **जी.आर. (1978)** – स्टडी ऑफ अण्डरलिविंग एडजेस्मेन्ट प्राब्लम ऑफ प्रोफेशनल एण्ड नान प्रोफेशनल कालेज स्टूडेन्ट, लघुशोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पृ.7.।

तिवारी, **राजेश (1996)**, ए स्टडी ऑफ द पर्सनॉलिटी एडजस्टमेंट इन रिलेशन टू सोशल ग्रुप एण्ड देयर इन्टेलीजेन्स, पूर्वांचल जर्नल ऑफ एजुकेशन स्टडीज,वैल्यूम-6, पृ. 5-8.।